ISSN NO.2395-0692
International Journal of
IJAHMS Arts, Humanities and Management Studies

"संस्कृत साहित्य के मूल रत्न आदि कवि बाल्मीकि"

डा0 सुगन्धा जैन
संस्कृत रीडर , तीर्थंकर आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
सम्बद्ध तीर्थांकर महावीर यूनीवर्स्टी , मुरादाबाद – (उ0प्र0)

साहित्यकार अपने आदर्श साहित्य के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन करता है और इससे भी कहीं अधिक वह समस्त राष्ट्र की आशाओं और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति करने वाला होता है। प्राचीन भारत के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, व्यवहारिक एवं राजनीतिक जीवन को चित्रित करने में दक्ष लौकिक साहित्य के मूल रत्न है। आदिकवि बाल्मीकि भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ रूप आदिकवि ने अपनी कला कौशल से मानव जीवन के नैतिक आदर्शो की रमणीय झांकियों को प्रस्तुत कर सुन्दरता का अनुपम समन्वय स्थापित किया है।

कुछ प्रतिभाएँ विलक्षण लोकोत्तर या कालातीत हुआ करती हैं, जिनके व्यक्तित्व की पहचान उनकी कीर्ति, यश, ख्याति स्वयं ही तत्काल प्रस्तुत हो अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है। इन्हीं अप्रतिम प्रतिभाओं में से एक है 'महर्षि वाल्मीकि'।

भारतीय जनमानस को सहस्त्रो वर्षो से प्रभावित करती आ रही रामकथा को निबद्ध करने वाले कवि वाल्मीकि ने स्वयं के विषय में कुछ भी नहीं लिखा। कारण उनमें यश लोलुपता का लेशमात्र भी न होना है।

महर्षि वाल्मीकि वेदज्ञ ऋषि भगवान श्रीराम के समकालीन तथा तमसा नदी के पवित्र वातावरण से आप्लावित आश्रम के वासी थे । जगत्–जननी माँ सीता ने उन्हीं के आश्रम में आश्रय ग्रहण कर आदिकवि की श्री को अलंकृत किया है। काव्यतत्व वेत्ताओं की माने तो तमसा के तट पर अलौकिक आशा से दीप्त प्रातः बेला में व्याध के बाण से आहत क्रौंच युगल में से एक की करूण चितकार ने महर्षि के सरल हृदय को वेदना से विदलित कर अतिकारूणिक रूप दे दिया उनकी वही करूणा आदि श्लोक

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

में परिणत हो गई और तत्काल मुख से कुछ ऐसे उद्‌गार प्रकट हुए कि 'बह्मा' भी विस्मय कर बैठे –

'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः
शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौचमिथुनादेकमवधीः
काममोहितम् ।।

अर्थात हे निषाद! तुझे नित्य–निरन्तर कभी भी शान्ति न मिले क्योंकि तूने इस क्रौंच के जोड़े में से एक की जो काम से मोहित हो रहा था, बिना किसी अपराध के हत्या कर डाली'' और उनका ये आदिश्लोक आदिकाव्य की पृष्ठभूमि बन गया।

उनकी करूणा से प्रसूत अद्‌भुत सहज सृष्टि पद्य, सर्ग, काण्ड, लय और अनुपम भावों में निबद्ध होकर ''रामायण'' के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हो गई।

''रामायण'' महाकवि की अद्‌भुत काव्य क्षमता, वेद–पुराण प्रसिद्ध इतिवृत्त कलात्मकता, औचित्यता, समतुलता की परिचायिका है जिसमें भगवान श्री राम के सम्पूर्ण जीवन दर्शन का विशुद्ध वर्णन व्याप्त है। महाकवि की प्रसिद्धि ''मधुर'' मधुराक्षरम्'' के रूप में विश्व के नभ मण्डल में गुन्जायमान हैं

24000 श्लोकों में आबद्ध रामायण अनुष्टुप वृत्तो से सुशोभित है। महाकवि ने गायत्री मंत्र के 24 पदो के प्रत्येक अक्षर से प्रति हजारवाँ श्लोक आरम्भ कर अपनी प्रतिभा से 24 ज्ञान माणिक अपने महाकाव्य में गूँथ दिये है।

वाल्मीकि की काव्य सुषमा उनकी कृति ''रामायण'' के पंचम स्वरं सुन्दरकाण्ड में अपनी उत्कृष्टतम् स्थिति पर आसीन हैं यह काव्य–खण्ड साहित्यिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक तीनों दृष्टिकोणों से वाल्मीकि की कारायित्री–प्रतिभा की प्राँजलता से प्राँजल अभिव्यंजना से अलंकृत उत्तम कला खण्ड है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

प्राकृतिक सौन्दर्य भौगोलिक भव्यता और ऋतुचक्र की निरन्तर गतिशीलता का वर्णन करने में भी वाल्मीकि ने अपनी रस सिद्धि एवं सिद्धहस्ततां का परिचय दिया है।

वाल्मीकि– रामायण संस्कृतसाहित्य की अनुपम निधि एवं उसका मूल रत्न है। सत्य और धर्म पर आधारित मर्यादित जीवन के सभी सुखदः दुःखद पक्षों का उद्घाटन रामायण में बड़ी कुशलता के साथ हुआ है। महाकवि का उद्देश्य रामकथा के माध्यम से लोक कल्याण करना, जीवन आदर्शो को प्रस्तुत करना सत्याचरण का उपदेश देना तथा मानवीय भावनाओं को आदर देना आदि था। वाल्मीकि की प्रकृति मानवीय दुःखों से प्रभावित होकर भावी घटनाओं की पूर्ण सूचनाओं को संकेतित करने में पूर्ण समर्थ है। रत्नाकर वत् असंख्य काव्यरत्नों से युक्त महाकाव्य रामायण चरित्र प्रधान कृति है। जिसका प्रत्येक वर्णन हृदयग्राही एवं शैक्षिक उपदेशों का दाता है। कवि की कल्पना एवं प्रतिभाओं का चरमोत्कर्ष रामायण वह लौकिक साहित्य का मूल है जिस पर सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का प्रासाद स्थिरता को प्राप्त किये हुए है।

वस्तु–विन्यास, चरित्र–चित्रण, शब्द–अर्थ, व्यंजना, गुण, रीति, अंलकार, छन्द, भाषा, कला कौशल आदि किसी न किसी रूप में आदिकाव्य समस्त लौकिक साहित्यों का उपजीव्य है और समस्त काव्य उसका उपादान है। लौकिक संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध को प्राप्त होने वाले ग्रन्थों ने रामायण के अमृत बिन्दु रूप कथा का पान कर ही स्वयं को अमर बनाया है जिनमें कुछ प्रमुख ग्रन्थ निम्न हैं–

www.ijahms.com

IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies
ISSN NO.2395-0692

कवि		रचनायें
महाकवि कालिदास	–	रघुवंश
भासकृत	–	प्रतिमा नाटाकम्, अभिषेक नाटकम्, यज्ञफलनाटकम्
दिङ्नाग की	–	कुन्दमाला
शक्तिभद्र का	–	आश्चर्य चूड़ामणि
भवभूति का	–	महावीरचरितम्, उत्तरामचरितम्
मुरारि का	–	अनर्घराघवम्
राजशेखर का	–	बालरामायणम्
हनुमान का	–	महानाटकम्
जयदेव का	–	प्रसन्न राघवम्
भास्कर का	–	उन्मत्तराघवम्
रामचूड़ामणि दीक्षित का	–	आनन्दराघवम्
महादेव का	–	अद्भुत दर्पण
कुमारदास का	–	जानकीहरणम्
प्रवरसेन का	–	सेतुबन्ध
भट्ट का	–	रावणवध
अभिनन्द का	–	रामचरित
क्षेमेन्द्र की	–	रामायण मन्जरी
सन्ध्या कर नन्दी तथा वामनभट् बाण की	–	रामपालचरितम्
भोजराज का	–	रामायण चम्पू

आदि सभी इस आदर्श का मानदण्ड है।

संस्कृत साहित्य के मूल एवं उत्कृष्ट रत्नों से युक्त यह महाकाव्य अति गौरवशाली है। धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष परक भारतीय संस्कृति का परिदृश्य है। प्रेम और करूणा का सागर है। मातृ–पितृ धर्म, राज–धर्म, प्रजा–धर्म, भातृ–धर्म, साख्य–भाव, दान–दया, तितिक्षा आदि सभी गुणों की खान है।

www.ijahms.com

वाल्मीकि और उनका काव्य अपने युग के समाज के समग्र जीवन को प्रतिबिम्बित करने वाला वह स्वच्छ ज्योति दर्पण है। जिसमें समाज का कोई भी पक्ष धुंधला या मलिन नहीं दिखाई देता ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान यहाॅ न हो। भारतीय संस्कृति के अनतः तत्वों को इसमें पढ़ा लिखा जा सकता है। धर्म के सभी तत्वों की व्याख्या सागर में रत्नों के वत् इसमें समायी हुई है।

निष्कर्षतः वाल्मीकि रामायण वह पावनपूत गंगजलधारा है जिसमें अववाहन करने वाला प्रत्येक मानस पवित्रता का ताना बाना ओढ़ के बाहर आता है। अतः यह स्वयं के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करने वाला ज्ञान सूर्य है। जिसकी किरणें कभी भी फीकी नहीं होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय दर्शन : डॉ० कपिल देव
2. वाल्मीकि रामायण : महर्षि वाल्मीकि
3. भारतीय साहित्य का इतिहास : डॉ0 कपिल देव द्विवेदी
4. अध्यात्म रामायण : मुनि लाल (अनुवादक)
5. वैदिक आख्यान : डॉ0 गंगा सागर राय
6. इतिहास पुराण का अनुशीलन : डॉ0 रामशंकर भट्टाचार्य
7. भारतीय संस्कृति और इतिहास : डॉ0 बैजनाथपुरी
8 भारतीय साहित्य की रूपरेखा : डॉ0 भोलाशंकर व्यास
9 लौकिक संस्कृत साहित्य : श्री चारूचन्द्र शास्त्री
10 लौकिक संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : डॉ0 गौरीनाथ शास्त्री
11. संस्कृत–कवि–दर्शन : डॉ0 भोलाशंकर व्यास
12 संस्कृत सुकवि समीक्षा : आचार्य बलदेव उपाध्याय

www.ijahms.com